स्मृति - सन्दर्भः

श्रीमन्महर्षि प्रणीत—धर्मशास्त्रसंग्रहः गौतमादि-
त्रयोदशस्मृत्यात्मकः

चतुर्थो भागः

नाग प्रकाशक
११ ए/यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली-७

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ स्मृतिसन्दर्भस्थ चतुर्थ भागे सङ्कलितस्मृतीनां

नामनिर्देशः

स्मृतिनामानि	पृष्ठाङ्काः
३२ गौतमस्मृतिः	१८७९
३३ वृद्धगौतमस्मृतिः	१९१९
३४ यमस्मृतिः	२०८३
३५ लघुयमस्मृतिः	२०९१
३६ बृहद्यमस्मृतिः	२१०१
३७ अरुणस्मृतिः	२११९
३८ पुलस्त्यस्मृतिः	२१३४
३९ बुधस्मृतिः	२१३७
४० वशिष्ठस्मृतिः नं० २	२१३९
४१ वृद्धयोगियाज्ञवल्क्यस्मृतिः	२१४७
४२ ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता	२३३९
४३ काश्यपस्मृतिः	२४८५
४४ व्याघ्रपादस्मृतिः	२४९१

विशेषः—द्वितीय वशिष्ठस्मृतेर्विषयवैशिष्ट्यात्पृथगुपन्यासः।

---

* श्रीगणेशाय नमः *

स्मृति-सन्दर्भ

चतुर्थ भाग

की

विषय-सूची

गौतम स्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
१	आचारवर्णनम्	१८७९
	उपनयन संस्कार का समय तथा उसका विधान और आचारवर्णन।	
२	ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम्	१८८१
	ब्रह्मचारी के नित्य-नैमित्तिक कर्मों का वर्णन और ब्रह्मचारी के नियम।	
३	ब्रह्मचारिप्रकरणवर्णनम्	१८८३
	नैष्ठिक ब्रह्मचारी के नियम, व्रत और दिनचर्या।	

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
४	विवाहप्रकरणवर्णनम्	१८८४
	विवाह प्रकरण में आठ प्रकार के विवाह और उनके लक्षण। उनमें ४ ब्राह्म, आर्ष, प्राजापत्य और दैव ये धार्मिक विवाह हैं इन धार्मिक विवाहों से उत्पन्न सन्तान अपने पूर्वजों का उपकार करती है।	
५	गृहस्थाश्रमवर्णनम्	१८८७
	गृहस्थाश्रम में गृहस्थ के कर्तव्य और गृहस्थाश्रम का वर्णन।	
	षोडश मातृका—	
	ऋतावुपेयात्सर्वत्र वा प्रतिषिद्धवर्जम्।	
६	गृहस्थाश्रमकर्तव्यवर्णनम्	१८८७
७	आपद्धर्मवर्णनम्	१८८९
	आपत्कल्पो ब्राह्मणस्याब्राह्मणाद्विद्योपयोगोऽनुगमनं शुश्रूषा समाप्ते ब्राह्मणो गुरुर्याजनाध्यापन प्रतिग्रहाः सर्वेषां पूर्वःपूर्वो गुरुस्तदलाभे क्षत्रवृत्तिस्तदलाभे वैश्यवृत्तिः।	
	आपत्काल में वर्णाश्रमी दूसरे वर्ण के कर्म को भी कर सकता है।	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

८ संस्कारवर्णनम् १८८९

संस्कृत जीवन की गरिमा—

द्वौलोके धृतव्रतौ राजा ब्राह्मणश्च बहुश्रुतस्तयो
श्चतुर्विधस्य मनुष्यजातस्यान्तः सञ्ज्ञानाञ्चलन
पतनसर्पणामायत्तंजीवनं प्रसूतिरक्षणमसंकरोधर्मः।

जिसका संस्कार होता है उसमें सभी उदात्तगुणों का आधान होने से ब्राह्मी तनु की प्राप्ति का अधिकार आ जाता है।

९ कर्तव्याकर्तव्यवर्णनम् १८९०

स्नातक गृहस्थ-जीवन का प्रवेशार्थी है वह विधि विहित विद्या का साङ्गोपांग अध्ययन कर भविष्य के गुरुतर उत्तरदायित्व को वहन कर आदर्श रूप से कर्तव्य पालन करता हुआ अपना, समाज का, राष्ट्र का हित-सम्पादन करता है—स्नातक की आदर्श दिनचर्या उसके नियम और आचार का वर्णन।

सत्यधर्मा आर्यवृत्त शिष्टाध्यापक शौचशिष्टः
श्रुतिनिरतः स्यान्नित्यमहिंस्रो मृदुदृढकारी दमदान
शील एवमाचारो मातापितरौ पूर्वापरान्सम्बन्धान्

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
	दुरितेभ्यो मोक्षयिष्यन् स्नातकः शश्वद्ब्रह्मलोकान्न च्यवते।	
१०	वर्णानांवृत्तिवर्णनम्	१८९३
	ब्राह्मणक्षत्रियादि वर्णों की पृथक्-पृथक् आजीविका वृत्ति।	
११	राजधर्मवर्णनम्	१८९४
	राजधर्म का निर्देश— राजा सर्वस्येष्टे ब्राह्मणवर्जं साधुकारीस्यात् साधुवादी त्रय्यामान्वीक्षिक्यांश्चाभिविनीतः शुचिर्जितेन्द्रियो गुणवत्सहायोपायसम्पन्नः समः प्रजासुस्याद्धितश्चासां कुर्वीत। न्यायपूर्वक प्रजापालन राजा का परम धर्म है।	
१२	विविध पापकरणे दण्डविधानवर्णनम्	१८९६
	भिन्न-भिन्न पापकर्म के दण्ड विधि का निरूपण।	
१३	साक्षीणां विधावर्णनम्	१८९७
	साक्षियों का वर्णन।	
१४	आशौचवर्णनम्	१८९८
	आशौच का प्रकरण।	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

१५ श्राद्धविवेकवर्णनम् १८९९

श्राद्ध का निर्णय तथा श्राद्ध कर्म में कौन ब्राह्मण पूज्य और कौन अपूज्य है।

१६ अनध्यायवर्णनम् १९०१

वेदादि शास्त्रों के अनध्याय काल का वर्णन।

१७ भक्ष्याभक्ष्यप्रकरणम् १९०२

भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों का निरूपण।

नित्यमभोज्यं केशकीटावपन्नं रजस्वला कृष्ण शकुनिपदोपहतं भ्रूणघ्नप्रेक्षितं गवोपघ्रातं भावदुष्टं शुक्तं केवलमदधि पुनः सिद्धं पर्युषितमशाक भक्ष्य स्नेह मांस मधून्युत्सृष्ट— तथाह मनुः गोश्चक्षीरमनिर्दशायाः सूतके चाजामहिष्योश्च मेधातिथि भाष्यम् नित्यमाविकमपेयमौष्ट्रमैकशफञ्चस्यन्दिनीयमसू सन्धिनीनांचयाश्चव्यपेतवत्साः···आदि।

नोट—पाराशर आदि प्रायः सभी शास्त्रों में इसका वर्णन है।

१८ स्त्रीषु ऋतुकाले सहवासप्रकरणम् १९०३

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

ऋतुकाल में भार्या के साथ सहगमन की विधि।

१६ प्रतिषिद्धसेवनेप्रायश्चित्तमीमांसावर्णनम् १६०४

निषिद्ध वस्तुओं के व्यवहार करने में प्रायश्चित्त का वर्णन।

२० विविधपापानांकर्मविपाकवर्णनम् १६०६

पृथक्-पृथक् पापों के कर्मफल का विपाक।

२१ सर्वपातकेषुशान्तिवर्णनम् १६०७

सब प्रकार के पातकों में शान्ति कर्म की आवश्यकता।

२२ निषिद्धकर्मणांजन्मान्तरेविपाकवर्णनम् १६०८

निषिद्ध काम करनेवाले का जन्मान्तर में कर्म का विपाक दुःख भोग आदि का वर्णन है।

२३ प्रायश्चित्तवर्णनम् १६०६

पाप कर्मों का दूसरे जन्म में फल और उनका प्रायश्चित्त।

२४ महापातकप्रायश्चित्तवर्णनम् १६११

महापातकियों के प्रायश्चित्त का विधान।

२५ रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् १६१२

गुप्त पापों के प्रायश्चित्त।

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

२६ प्रायश्चित्तवर्णनम् १६१२
अवकीर्णी और दुराचारी के प्रायश्चित्त का वर्णन

२७ कृच्छ्रव्रतविधिवर्णनम् १६१४
कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रत की विधिका वर्णन।

२८ चान्द्रायणव्रतविधिवर्णनम् १६२६
चान्द्रायण व्रत की विधि।

२९ पुत्राणांसम्पत्तिविभागवर्णनम् १६१७
लड़कों को अपने पिता की सम्पत्ति में बंटवारा।

वृद्धगौतमस्मृति के प्रधान विषय

१ (क) धर्मोपदेशवर्णनम् १६१६
युधिष्ठिर का वैशम्पायन के प्रति वैष्णव धर्म के जिज्ञासार्थ प्रश्न इसके श्रवण करने से पाप दूर हो जांय। (१—१०) वैशम्पायन का उत्तर (११-१२) युधिष्ठिरका भगवान् से वैष्णव धर्म की जानकारीके लिये प्रश्न (१३—२७) भगवान द्वारा वैष्णव धर्म का माहात्म्य बतलाना और उसका सविस्तर वर्णन।
(२८—७१)

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
१ (ख)	भगवत्स्वरूवर्णनम्	१६२५
२	धर्मप्रशंसावर्णनम्	१६२६
	वैशम्पायन का प्रश्न (१) भगवान् ने धर्म का मार्ग बतलाया (२—१०)।	
	युधिष्ठिर का प्रश्न कि ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्यादि किस गति से यमलोक जाते हैं ? (११—१३)। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य किन-किन कर्मों से स्वर्ग जाते हैं उसका वर्णन (१५—२३)।	
	युधिष्ठिर का प्रश्न—शुभ कर्म और अशुभ कर्मों की वृद्धि और नाश किस प्रकार होता है ? (३३) भगवान् का शुभ कर्म और अशुभ कर्म के वृद्धि नाश का सविवरण प्रतिपादन (३४—४०)।	
३	दानप्रकरणवर्णनम्	१६३१
	युधिष्ठिर के प्रश्न—उत्तम, मध्यम और अधम दान क्या है ? किस दान से उत्तम, मध्यम और अधम की वृद्धि होती है (१—८)।	
	भगवान् ने उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार से दान देने का सविस्तार वर्णन किया। (१०—८८) ज्ञानी को दान देने की बहुत प्रशस्ति गाई है—	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

पापकर्म समाक्षिप्तं पतन्तं नरके नरम् ।
त्रायते दानमप्येकं पात्रभूतेकृते द्विजे ॥७६॥
बीजयोनि विशुद्धा ये श्रोत्रियाः संयतेन्द्रियाः ।
श्रुत्वान्नविरला निस्यन्ते पुनन्तीह दर्शनात् ॥८४
स्वयं नीत्वा विशेषेण दानन्तेषां गृहेष्वथ ।
निधापयेत्तुमद्भक्त्या तद्दानं कोटिसम्मितम् ॥८५॥

४ विप्राणां गुणदोषवर्णनम् १९५०

ब्राह्मणों के लक्षण और चारो वर्णों मे ब्राह्मण किस प्रकार दूसरों के तारनेवाले होते हैं। एतद्विषयक युधिष्ठिर का प्रश्न (१—५)। भगवान ने उत्तम मध्यम और अधम ब्राह्मणों के लक्षण बताये (७—८७)।

शीलमध्ययनं दानं शौच मार्दवमार्जवम् ।
तस्माद्द दान् विशिष्टान्वै मनुराह प्रजापतिः ॥२४॥
भूर्भुवः स्वरिति ब्रह्म यो वेद परमद्विजः ।
स्वदारनिरतो दान्तः स च विद्वान्सभूसुरः ॥२५॥
सन्ध्यामुपासते विप्रा नित्यमेव द्विजोत्तमाः ।
ते यान्तिनरशार्दूल ब्रह्मलोकमसंशयम् ।

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

सावित्रीमात्रसारोऽपि वराविप्रः सुयन्त्रितः ।
नायन्त्रितश्चतुर्वेदी सर्वाशीसर्वविक्रयी ।

विप्र प्रशंसा—

विप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहं
विप्रप्रसादादसुराञ्जयामि ।
विप्रप्रसादाच्चसदक्षिणोऽहं
विप्रप्रसादादजितोऽहमस्मि ॥

५ जीवस्यशुभाशुभकर्मवर्णनम् १९४६

युधिष्ठिर का प्रश्न—मनुष्यलोक और यमलोक का क्या प्रमाण है ? और मनुष्य किस प्रकार यम-लोक से तर जाते हैं ? प्रेतलोक और यमलोक की गति किस प्रकार है ? (१—९) ।

यमलोक आदि का वर्णन और जीव की गति तथा कौन यमलोक और स्वर्गलोक को जाते हैं । सब प्राणी यमलोक में किस प्रकार दुःख भोगते हुए जाते हैं (१०—५८) ।

युधिष्ठिर का प्रश्न—किस दान के करने से जीव यमलोक के मार्ग से छुटकारा पाकर सुख प्राप्त

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

करते हैं (५९—६१)। अनेक प्रकार के दान और वृक्षादि लगाने और जिन श्रेष्ठ कर्मों से मनुष्य स्वर्ग को जाता है उनका विस्तारपूर्वक वर्णन।

६ सर्वदानफलवर्णनम् १६५८

सम्पूर्ण प्रकार के दानों का फल और कैसे ब्राह्मण को दान देना चाहिये। दानपात्र ब्राह्मण के लक्षण तथा तपस्या का फल (१—४)।

ऐसे ब्राह्मणों के लक्षण जिन्हें दान देने से मनुष्य दुःखों से छूट जाता है। यथा—

ये क्षान्तदान्ताश्च तथाभिपूर्ण
जितेन्द्रियाः प्राणिवधेनिवृत्ताः।
प्रतिग्रहे सङ्कुचिता गृहस्था-
स्ते ब्राह्मणास्तारयितुं समर्थाः ॥१७९॥

सत्पात्र और पूज्य ब्राह्मण के शुभलक्षण—

ब्राह्मणो यस्तु मद्भक्तो मद्याजीमत्परायणः।
मयि सन्यस्त कर्मा च स विप्रस्तारयिष्यति १८१

७ वृषदानमहत्त्ववर्णनम् १६७५

वैशम्पायन ने पूछा कि दान धर्म को सुनने पर

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

मुझे जिज्ञासा हुई है कि आप और-और धर्मों को भी बतलाइये (१-४)।

दश गौ के दान के समान एक बैल का दान पुष्ट बैल का दान हजार गोदान के समान कहा गया है।

दशधेनु समोऽनड्वानेकोऽपि कुरुपुंगव।
मेदोमांस विपुष्टांगो नीरोगः पापवर्जितः ॥६॥

इसके दान करने से ब्राह्मण खेत को जोत सकते हैं और ज्ञानपूर्वक अन्नोत्पादन कर सुन्दर स्वस्थ दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर सृष्टि की उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं।

अनेक प्रकार के दान जैसे मन्दिरों में भजन कीर्तन, प्याऊ लगाना, वृक्षारोपणवर्णन (५-१३३)

८ पञ्चमहायज्ञवर्णनम् १६८७

युधिष्ठिर के प्रश्न पञ्चयज्ञ विधान पर (१—७) पञ्चमहायज्ञ करने की आवश्यकता (८—१८)। युधिष्ठिर का स्नानविधि पर प्रश्न (१९)। स्नान करने की विधि और स्नान के साथ क्या-क्या करना चाहिये। सन्ध्या देवर्षि पितृतर्पण करके

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
	ही जल से निकलना चाहिये। बिना तर्पण किये वस्त्र निष्पीड़न करने से देवता, ऋषि और पितर शाप देते हुए निराश होकर लौट जाते हैं।	
	अतर्पयित्वा तान्पूर्वं स्नानवस्त्रन्नपीड़येत्। पीड़येद्यदितन्मोहाद्देवाः सर्षिगणास्तथा ॥ पितरश्च निराशास्तं शप्त्वा यान्तियथागमम् ॥६६॥	
	(२०—७२) विभिन्न प्रकार के पुष्पों द्वारा पूजा करने के माहात्म्य पर प्रश्न ? (७३)। चढ़ाने योग्य पुष्पों का वर्णन और वर्जित पुष्पों का निषेध (७४—८३)।	
	युधिष्ठिर का देवताओं की पूजन की विधि का प्रश्न (८४—८५)। मोतियों के पूजन का विधान (८६—९१)। विष्णु के भक्तों के लक्षण पर युधिष्ठिर का प्रश्न (९२)। भगवान् के भक्तों के लक्षण (९३—११८)।	
६	कपिलादानप्रशंसावर्णनम्	१९९६
	कपिलाह्यग्निहोत्रार्थे विप्रार्थे च स्वयम्भुवा। सर्वतेजः समुद्धृत्य: निर्मिता ब्रह्मणापुरा ॥२३॥	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

गो सहस्त्रश्चयोदद्यादेकाञ्चकपिलांनरः ।
समन्तस्यफलम्प्राह ब्रह्मा लोकपितामहः ॥

१० कपिलागोप्रशंसावर्णनम् २००७

कपिला गाय का लक्षण और उसका दान किस प्रकार करना चाहिये (१–६६) ।

यस्यैताः कपिलाःसन्ति गृहे पापप्रणाशनाः ।
तत्रश्रीविंजयःकीर्तिःस्थिताः नित्यं युधिष्ठिर ॥

युधिष्ठिर का प्रश्न—दान करने का समय और श्राद्ध का समय और पूजा करने के योग्य ब्राह्मण और कौन व्यक्ति हैं जिनकी पूजा नहीं करनी चाहिये । (६७)

दान का समय दान के पात्र व दान की विधि—

दैवं पूर्वाह्हिकं कर्म पैत्रिकं चापराह्हिकम् ।
कालहीनं च यद्दानं तद्दानं राक्षसं विदुः ॥

(६६—१११)

११ ब्रह्मघातकलक्षणवर्णनम् २०१६

युधिष्ठिर का प्रश्न—(१) ब्रह्मघाती के लक्षण २—६) । युधिष्ठिर का प्रश्न—सब दानों में श्रेष्ठ

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

दान और अभोज्य के लिये भगवान से प्रश्न (१०) अन्न की प्रशंसा, अन्न, विद्यादान की महिमा, झूठ बोलने से यज्ञ क्षीण होता है, विस्मय से तप, निन्दास्तुति से आयु, ढिंढोरा पीटने से दान क्षीण होता है (११—२६)।

१२ धर्मशौचविधिवर्णनम् २०२३

युधिष्ठिर का प्रश्न—"धर्म का वर्णन बहुत प्रकार से हुआ है सो अब धर्म का लक्षण समझाइये।" (१) भगवान का उत्तर—धर्म का लक्षण—

"अहिंसा सत्यमस्तेयमानृशंस्यं दमः शमः।
आर्जवं चैव राजेन्द्र निश्चितं धर्मलक्षणम्।"
(२—१६)।

युधिष्ठिर का प्रश्न—साधु ब्राह्मण कौन होते हैं जिन्हें दान देने से फल होता है (२०)।

भगवान् का उत्तर—अक्रोधी, सत्यवादी, धर्मपरायण, अमानी, सहिष्णु, जितेन्द्रिय, सर्वभूत हितेरत—इनको देने का महान् फल होता है—

अक्रोधनाः सत्यपराः धर्मनित्याः दमेरताः।
तादृशाः साधवोलोके तेभ्योदत्तं महाफलम्॥

अध्याय　　प्रधान विषय　　पृष्ठांक

आदि २ (२१—२७)। युधिष्ठिर का प्रश्न—भीष्मपितामह ने धर्माधर्म की व्याख्या विस्तार से की उनमें से कृपया सार मुझे बतलाइये। धर्म सार में अन्नदान का महत्त्व—"अन्नदः प्राणदो लोके प्राणदः सर्वदो भवेत्। तस्मादन्नं प्रयत्नेन दातव्यं भूतिमिच्छता॥" इत्यादि—(२९—५३)।

१३ भोजनविधिवर्णनम्　　२०२८

भोजन की विधि पर प्रश्न—(१) भोजनविधि का वर्णन (२—२०)।
"नैकवासास्तु भुञ्जीयान्नैवान्तर्धाय वै द्विजः।
नभिन्नपात्रे भुञ्जीत पर्णपृष्ठे तथैव च॥"
अन्नं पूर्वं नमस्कुर्यात्प्रहृष्येनान्तरात्मना।
नान्यदालोकयेदन्नान्नजुगुप्सेत वा पुनः—(५-६)
गाय को घास देने व तिल देने का माहात्म्य

१४ आपद्धर्मवर्णनम्　　२०३२

युधिष्ठिर का आपद्धर्म के लिये प्रश्न—(१) आपद्धर्म का काल व निर्णय (२—९)।
युधिष्ठिर का प्रश्न—प्रशंसनीय ब्राह्मण कौन हैं (१०) प्रशंसनीय ब्राह्मणों के लक्षण (११-३४)। युधिष्ठिर का धर्मसारके लिये प्रश्न (३५) धर्मका सार (३६-६५)

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

१५ धर्ममहत्त्ववर्णनम् २०३६

धर्म का माहात्म्य (१—६८)।

१६ चान्द्रायणविधिवर्णनम् २०४८

युधिष्ठिर का चान्द्रायणविधि पर प्रश्न (१) चान्द्रायणविधि का वर्णन (२—४८)।

१७ द्वादशमासेषु धर्मकृत्यवर्णनम् २०५३

कार्तिक से लेकर आश्विन तक प्रति मास का दान व पूजा का वर्णन (१—५८)

१८ एकभुक्तपुण्यफलवर्णनम् २०५६

जो दिन में एक बार भोजन करता है उसका माहात्म्य। उपवास को लेकर युधिष्ठिर का प्रश्न (१) उपवास का माहात्म्य (१२—१४)।
प्रत्येक मास में भिन्न-भिन्न उपवास करने का माहात्म्य (१६—३५)। कृष्णद्वादशी में भगवत्-पूजन का माहात्म्य (३६—४६)

१६ दानफलवर्णनम् २०६४

वैशम्पायन द्वारा दानकालविधि का प्रतिपादन। विषुवत् संक्रान्ति व ग्रहण काल में दान कैसे करे, इसका माहात्म्य (१—२३) गायत्री जप और

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

पीपल पूजन का माहात्म्य (२४—३२)। ब्राह्मण शूद्र कैसे हो जाता है ? युधिष्ठिर का प्रश्न (३३) भगवान का उत्तर—ब्राह्मण शूद्र संज्ञा निन्दनीय कर्म करने से प्राप्त करता है (३४—४२)।

२० तीर्थलक्षणवर्णनम् २०६६

तीर्थ का माहात्म्य (१—२४)।

"आत्मा नदी भारतपुण्यतीर्थम् नरवा तीर्थं सर्वतीर्थप्रधानः। श्रुत्वातीर्थ सर्वमात्मन्यथोच्चैः स्वर्गो मोक्षः सर्वमात्मन्यधीनम् ॥ (२३)

युधिष्ठिर का प्रश्न—सम्पूर्ण पापों के नाश करनेवाला प्रायश्चित्त कौन-सा है ? (२५) रहस्य प्रायश्चित्त का वर्णन (२६—४६)।

२१ भक्त्यार्चनविधिवर्णनम् २०७५

युधिष्ठिर का प्रश्न—कौन से ब्राह्मण पवित्र हैं ? (१) ब्राह्मणों के गुण व कर्म का वर्णन (२—३२)

"अग्निहोत्रव्रतपरान् स्वाध्यायनिरतान् शुचीन्।
उपवासरतान्दान्तान् तान् देवा ब्राह्मणाः विदुः (७)
न जातिः पूज्यते राजन् गुणाः कल्याणकारकाः।
चाण्डालमपि वृत्तस्थं तं देवाः ब्राह्मणं विदुः (८)

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

२२ शूद्रधर्मवर्णनम् २०७७

शूद्रों के वर्ण व धर्म का वर्णन (१-११) भग-वद्भक्तवर्णन (१२-३५) वैशम्पायनजी द्वारा विष्णु के पूजन करने का व विष्णुलोक जाने का वर्णन (३६—४७)

यमस्मृतिः

१ प्रायश्चित्तवर्णनम् २०८२

इसमें चारों वर्णों के प्रायश्चित्त और उनकी शुद्धि का विधान बताया गया है (१—७८)।

लघुयम स्मृतिः

१ नानाविधप्रायश्चित्तवर्णनम् २०९१

विभिन्न प्रकार के प्रायश्चित्तों का वर्णन साथ ही यज्ञ, तालाब व कूप आदिनिर्माण का विधान यथा—

इष्टापूर्तन्तु कर्त्तव्यं ब्राह्मणेन प्रयत्नतः।
इष्टेन लभते स्वर्गं पूर्ते मोक्षं समश्नुते ॥

(१—९९)

बृहद्यम स्मृतिः

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

१ नानाविधप्रायश्चित्तवर्णनम् २१०१

नानाविध प्रायश्चित्तों का वर्णन (१—१५)।

२ चान्द्रायणविधिवर्णनम् २१०३

चान्द्रायण विधि का वर्णन (१—६)।

३ प्रायश्चित्तवर्णनम् २१०४

प्रायश्चित्त की विधि—दश वर्ष तक के बालकों से प्रायश्चित्त न कराया जाय। उसने यदि पाप किया हो तो पिता, माता या भाई से प्रायश्चित्त कराया जाय (१—१६)।

कन्या के रजोदर्शन से माता-पिता को नरक प्राप्ति (२०—२२) श्राद्ध में वर्जनीय ब्राह्मण और सत्पात्र के लक्षण वर्णन (२३—५०)।

४ गोवधप्रायश्चित्तवर्णनम् २११०

गोवध के प्रायश्चित्त का वर्णन (१—१५)। धर्मशास्त्र को जाने बिना प्रायश्चित्त के लिये निर्णय देने का पाप (२६)। सत्पात्र ब्राह्मण लक्षण वर्णन (३०—६२)

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

५ श्राद्धकालेपत्न्यांरजस्वलायांनिर्णयः २११६

श्राद्धकाल में श्राद्ध करनेवाले की स्त्री रजस्वला हो जाय तो उसका निर्णय तथा जिसकी सन्तान हो उसके विभाग का दिग्दर्शन (१—२६)।

अरुणस्मृतिः

१ प्रतिग्रहवर्णनम् २११६

प्रतिग्रह के विषय में अरुण का प्रश्न (१—२)

आदित्य का उत्तर—

"जपोहोमस्तथा दानं स्वाध्यायादिकृतं शुभम् ।
दातुर्नप्रथते विप्र अतो न स्वर्गमाप्नुयात् ॥"

ब्राह्मण को अनुचित दान लेने के प्रायश्चित्त करने का वर्णन ।

प्रतिग्रहेण विप्राणां ब्राह्मंतेजः प्रशाम्यति ।

प्रतिग्रह प्रायश्चित्त वर्णन (३—१४८)।

पुलस्त्यस्मृतिः

१ वर्णाश्रमधर्मवर्णनम् २१२४

पुलस्त्य ऋषि ने कुरुक्षेत्र में जो वर्णाश्रमधर्म बतलाया उसका वर्णन। यथा—

अध्याय | प्रधान विषय | पृष्ठांक

"अहिंसा सत्यवादश्च सत्यं शौचं दया क्षमा।
वर्णिनां लिङ्गिनाञ्चैव सामान्यो धर्म उच्यते।"
इत्यादि प्रकार से धर्म का वर्णन किया है (१-२८)।

बुधस्मृतिः

१ चातुर्वर्ण्यधर्मवर्णनम् २१३७

इसमें चारों वर्णों का संक्षेप से धर्म वर्णन है।

वशिष्ठस्मृतिः (२)

१ वर्णाश्रमाणांनित्यनैमित्तिककर्मवर्णनम् २१३९

मुनियों का वशिष्ठ से प्रश्न (१—३)। वर्णाश्रमधर्म, वैष्णवों का आचार-व्यवहार व उनकी वृत्ति, वैष्णवों के आचार और शंख चक्र धारण करने की विधि (४—४२)।

२ वैष्णवानां नामकरणसंस्कारवर्णनम् २१४२

वैष्णव सम्प्रदायों के अनुसार नामकरण की विधि का वर्णन (१—३२)।

३ वैष्णवानां निष्क्रमणान्नप्राशनसंस्कारवर्णनम् २१४७

वैष्णव धर्म के अनुसार बालक को घर से बाहर

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

लाने एवं अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म उपनयनादि संस्कारों का वर्णन (१—१६६)।

४ गृहस्थधर्मवर्णनम् २१६५

विद्याध्ययन से स्नातक होकर वैष्णवधर्म के अनुसार नैष्ठिक ब्रह्मचारी का वर्णन और आठ प्रकार के विवाहों का व विधि का वर्णन तथा गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन एवं पुंसवन आदि का कथन (१-१२१)

५ स्त्रीधर्मवर्णनम् २१७८

पतिव्रता स्त्री का आचरण व दिनचर्य्या तथा पातिव्रत का माहात्म्य, यथा—

शीलमेव तु नारीणां प्रधानं धर्म उच्यते ।
शीलभंगेन नारीणां यमलोकं सुदारुणम् । (२)
नास्ति स्त्रीणां पृथग्ज्ञानं न व्रतं नापि पोषणम् ।
पतिशुश्रूषणे तासां स्वर्गमेवाभिधीयते ॥ (३)

(१—८३)

६ नित्यनैमित्तिकविधिवर्णनम् २१८६

वैष्णव धर्म के अनुसार नित्यनैमित्तिकविधि का वर्णन और भगवान की पूजन का विधान, साथ ही उत्सव मनाने का माहात्म्य और उत्सवों

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

की विधि (१—२८०)। वैष्णव धर्म के अनुसार पितृयज्ञ श्राद्ध तथा आशौच व प्रायश्चित्त का वर्णन। (२८१—५४२)

७ विष्णुस्थापनविधिवर्णनम् २२३६

ऋषियों ने वशिष्ठ से विष्णु की मूर्ति के संस्थापन की विधि के विषय में प्रश्न किया (१) विष्णु की प्रतिष्ठा की विधि व समय का वर्णन (२—११०)

बृहद्योगीयाज्ञवल्क्यस्मृतिः

१ मन्त्रयोगनिर्णयवर्णनम् २२४८

सब मुनियों ने याज्ञवल्क्य से गायत्री, ओंकार प्राणायाम, ध्यान और सन्ध्या के मन्त्रों को पूछ कर आत्मज्ञान की जिज्ञासा की (१—४४)।

२ ओंकारनिर्णयवर्णनम् २२५१

ओंकार का माहात्म्य और ज्ञान का वर्णन (१—४५) साकार-निराकार दो प्रकार के ब्रह्म का वर्णन और ओंकार की उपासना ब्रह्मज्ञान को विकाश करनेवाली बताई गई है। (४६—१५८)

३ व्याहृतिनिर्णयवर्णनम् २२६७

अध्याय   प्रधान विषय   पृष्ठांक

सप्तव्याहृतियों का निर्णय और भू आदि व्याहृतियों से सात लोकों, सात छन्द और सप्तदेवताओं सहित उनका माहात्म्यवर्णन (१—३२)।

४ गायत्रीनिर्णयवर्णनम्   २२७०

गायत्री मन्त्र का निर्णय (१—८२)।

५ ओंकारगायत्रीन्यासवर्णनम्   २२७८

गायत्री न्यास करने की विधि बताई गई है
(१—१०)

६ सन्ध्योपासननिर्णयवर्णनम्   २२७९

सन्ध्या करने का माहात्म्य और सन्ध्या न करने से पाप का निर्णय किया गया है।

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यान्तु विकर्मस्थाः द्विजातयः।
तेषां तु पावनार्थाय संन्ध्या सृष्टा स्वयम्भुवा ॥६॥
(१—३१)

७ स्नानविधिवर्णनम्   २२८३

स्नान करने के मन्त्र और स्नान करने की विधि, तर्पणविधि, (१-१२८) जपविधि वर्णन (१२९-१६०)

८ प्राणायामवर्णनम्   २३०१

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
	प्राणायाम और प्रत्याहार करनेकी विधि का वर्णन । १—५६) ।	
९	ध्यानविधिवर्णनम्	२३०७
	भगवान के ध्यान लगाने का नियम और कुण्डलिनी का ज्ञान (१—२१) ।	

ज्ञानंप्रधानं न तु कर्महीनं कर्मप्रधानं न तु बुद्धिहीनम् ।
तस्माद्द्वयोरेव भवेतसिद्धिर्नह्येकपक्षो विहगःप्रयाति ॥२६॥

गवां सर्पिः शरीरस्थं न करोत्यंगपोषणम् ।
निःसृतं कर्मचरितं पुनस्तस्यैवभेषजम् ॥३०॥

एवं सति शरीरस्थः सर्पिर्वत् परमेश्वरः ।
विना चोपासनादेव न करोति हितं नृषु ॥३१॥

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
	गायत्री मन्त्र की व्याख्या, (३२—६१) अध्यात्मनिर्णय वर्णन (६२—१३४)। अन्नमहत्त्ववर्णन (१३५—१५१) अध्यात्मवर्णन (१५२—१६८) ।	
१०	सूर्योपस्थानवर्णनम्	२३२६
	सूर्योपस्थान की विधि (१—२०) ।	
११	योगधर्मवर्णनम्	२३२८
	आत्मयोग का वर्णन और उसका महत्त्व (१ ५६)	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

१२ विद्याऽविद्यानिर्णयवर्णनम् २३३४

विद्या और अविद्या अर्थात् ज्ञानकाण्ड और कर्मकाण्ड का निदर्शन (१—४१)।

ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता

१ चतुर्वेदानां शाखावर्णनम् २३३६

चार वेदों का वर्णन और उनकी शाखाओं का सविस्तार वर्णन (१—४७)।

२ नित्यनैमित्तिककर्मवर्णनम् २३४४

नित्यकर्म और पञ्चयज्ञों का विधान—

पञ्चसूना गृहस्थस्य वर्त्ततेऽहरहःसदा ।
कंडनी पेषणी चुल्ली जलकुम्भी च मार्ज्जनी ॥
एतांश्च वाहयन्विप्रो बाधते वै मुहुर्मुहुः ।
एतेषां पावनार्थाय पञ्चयज्ञाः प्रकीर्तिताः ॥
अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तुतर्पणम् ।
होमोदैवोबलिर्भूतनृयज्ञोऽतिथिपूजकः ॥

तिलक के भेद ! यथा—

भ्रुवोर्मण्डलमध्यस्थं तिलकं कुरुते द्विजः ।
तत्केवलं धनं कृत्वा लिंगभेदाः स उच्यते ॥

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

वेणुपत्रदलाकारं वैष्णवं तिलकं स्मृतम् ।
अर्द्धचन्द्रं तथा शैवं शाक्तेयन्तिर्यगुच्यते ॥२१॥

चतुः कोणमितिस्पष्टं विकरालमुदाहृतम् ।
पैशाचं विन्दुसंयुक्तं तिलकं धर्मनाशनम् ॥२२॥

नैमित्तिक कर्म करने का प्रकार, प्राणायाम, त्रैकालिक सन्ध्याविधि वर्णन, तर्पण, देवपूजाविधान, वलिवैश्वदेव, भोजनविधि, श्वकाकोच्छिष्ट भक्षण प्रायश्चित्त (१—२११)।

३ नैमित्तिकश्राद्धविधिवर्णनम् २३७५

नैमित्तिक श्राद्ध यथा पिता की मृत्यु की तिथि पर जो श्राद्ध किया जाय उसे एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं। उनका वर्णन (१—७६)।

४ श्राद्धवर्णनम् २३६६

अमावस्या, संक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया, सूर्य और चन्द्रग्रहण में स्नान करने का विधान और महत्त्व बताया गया है। (१—१६४)।

५ श्राद्धवर्णनम् २३८४

आमश्राद्ध अर्थात् सत्तू, गुड़, पिण्याक, दूध इन

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठाङ्क

द्रव्यों से जो श्राद्ध किये जाते हैं उनका विधान (१—२६)।

६ श्राद्धवर्णनम् २४०२

नान्दीमुख श्राद्ध जो विवाहादि शुभकर्मों पर किया जाता है उसका विधान और वर्णन (१—१२५)।

७ श्राद्धवर्णनम् २४०५

प्रेतश्राद्ध और सपिण्डीकरण की विधि (१-६०)।

८ ब्रह्मचारिधर्मवर्णनम् २४११

ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन (१—१४४) स्नातक होने पर विवाह का वर्णन (१४५—२६६)। नव-संस्कारों का वर्णन (३००—३६१)।

९ तिथिनिर्णयवर्णनम् २४४७

प्रतिपदा से पूर्णिमा तक तिथियों पर विचार, तथा कौन तिथि उदयव्यापिनी और कौन तिथि काल-व्यापिनी ली जाती है तथा किस तिथि में किस देवता का पूजन किया जाता है उसका वर्णन । (१—५५)

१० विनायकादिशान्तिवर्णनम् २४५२

दुष्ट स्वप्न के होनेपर विनायक की शान्ति तथा ग्रहशान्ति का विधान बताया गया है (१-१६०)।

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठांक
११	दानविधिवर्णनम्	२४६७
	दान का महत्त्व और गोदान की विधि (१-२१) गोदान का महत्त्व (२२—२६)। महिषी के दान का महत्त्व (१७—३१)। वृषभ के दान का महत्त्व (३२—३६)। भूमिदान (३७—३८)। तिल दान (३६—४०)। अन्न दान (४१—४३)। सोने का दान (४४)। चान्दी के दान का महत्त्व (४५—६६)।	
१२	प्रायश्चित्तवर्णनम्	२४७४
	दी हुई चीज को वापस लेने में न्याय (१—४) अदेय वस्तुओं का वर्णन (५—६)। विवाद न होनेवाली वस्तुओं का वर्णन (७—१६)। इष्ट कर्मों का वर्णन (२०—३४)। विकर्मों का वर्णन (३५) प्रायश्चित्त और शुद्धि का वर्णन (३६-६३)।	
१३	आशौचवर्णनम्	२४८१
	सूतक पातक का वर्णन (१—१३)। जिन पर सूतक पातक नहीं लगता उनका वर्णन (१४-१६)। कितने दिन किसका सूतक लगता है उसका वर्णन (२०—३२)।	

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

काश्यपस्मृतिः

१ प्रायश्चित्तवर्णनम् २४८५

आहिताग्नि के लक्षण, गाय, बैल, मृग, महिषी, कौआ, हंस, सारस, बिल्ली, गीदड़, सांप और नेवला की हिंसा करने का प्रायश्चित्त, पांच प्रकार के महापातक बतलाये गये हैं, अकाल में भूमिकम्प का, घर में उल्लू बोलने का प्रायश्चित्त बताया गया है। मथनी और हल टूटने का प्रायश्चित्त बर्तनों के साफ करने का विधान, पहले जिन्होंने पाप किया हो उनके चिन्हों का वर्णन तथा पापों से नरक गति का वर्णन (१—१६)।

व्याघ्रपादस्मृतिः

१ स्मृतिमहत्त्ववर्णनम् २४९१

ऋषियों ने व्याघ्रपाद से युगधर्म और वर्णधर्म का प्रश्न किया—युगधर्म का वर्णन और द्विजातियों को वेदाध्ययन का उपदेश (१—१५) पिण्ड-दान और पितृतर्पण का महत्व (१६—१८) तीर्थ और गया श्राद्ध का वर्णन (१९)। श्राद्ध काल और विधि (२०—४६)। श्राद्ध करने व पूजा

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठांक

करनेवालों का आचरण (४७—५७)। पौर्णमासी का निर्णय (५८)।

पुत्रहीन स्त्री के श्राद्ध का विधान (५९—६१) पिताहीन को परपितामह के उपस्थित रहने पर श्राद्ध का विधान (६२) श्राद्ध करने की सामग्री और उसका निर्णय (६३—८०)। पितरों की पूजा (८१—८२) सब धर्म कार्यों में धर्मपत्नी को दाहिने ओर बिठाने का विधान (८३—८५)। पूजा में स्त्री को बिठाना और सिर में त्रिपुण्ड लगाने का विधान (८६—९२)। तिल का निर्णय (९३-९७) पूजा, यज्ञ तथा श्राद्धमें मौन रखनेका विधान (९८-१००)। श्राद्ध का नियम (१०१—११४)। पिण्ड दान और पिण्डपूजन का विधान (११५—१२५) जो पितरों का श्राद्ध नहीं करते उनके पितर जूठा अन्न खाकर दुःख में विचरते हैं (१२६—१४२)

जो पितरों का तर्पण नहीं करता वह नरक जाता है (१४३—१५२)। मूर्ख को दान देने की निन्दा (१५३—१५४)। श्राद्ध करनेवालों का नियम, श्राद्ध के दिन जो मट्ठा होता है वह गोमांस और शराब के बराबर होता है। श्राद्ध में बहिनों और उनके परिवार को निमन्त्रण का महत्त्व

(१५५—१६०)। श्राद्ध के नियम और उनके विरुद्ध चलने पर चान्द्रायण व्रत का विधान (१६१—१६६)।

श्राद्धका भोजन, अन्न और ब्राह्मण का विस्तार से वर्णन (१६७—२०७)। पैर धोने से पिण्ड विसर्जन तक श्राद्ध का विषय माना जाता है (२०८-२१०)। श्राद्ध में निषिद्ध पदार्थों का उल्लेख (२११—२१२)। वानप्रस्थ यतियों के श्राद्ध के नियम (२१३—२१७)। सन्ध्या के नियम (२१८-२२३)। श्राद्ध में भोजन बनाने के अधिकारी (२२४—२४३)। श्राद्ध के अन्न का निर्णय (२४४-२६६)। जिनका एकोद्दिष्ट श्राद्ध ही होता है उनका वर्णन (२६७—२८५)। श्राद्ध में किन-किन अंगों का निषेध और विधान है (२८६—३१७)। वर्ष-वर्ष में श्राद्ध करने का महत्त्व (३१८—३२७) श्राद्ध करने के स्थान का वर्णन (३२८—३३७)। श्राद्ध करने के नियम, सामान्य व्यवहार, यज्ञ, दान, जप, तप, स्वाध्याय, पितृतर्पण की विशेष विधियां (३३७—३६६)।

स्मृतिसन्दर्भ के चतुर्थ भाग की विषय सूची

समाप्त

॥ शुभम्भूयात् ॥